ग़ज़ल

इरशाद कामिल

इक मसीहा हो गया अनजान सारे शहर से,
ले गया वो छीन कर ईमान सारे शहर से।

ये कहाँ की हुक्मरानी आपने जो कर दिया,
माँगते हैं आप वो नुकसान सारे शहर से।

वो समझते हैं बना देंगे ख़ुदाओं का नगर,
ख़त्म जब कर देंगे वो इन्सान सारे शहर से।

सौ परेशानी में भी बरसों से यूँ ही चल रहा,
हो रहा है ख़ुद ख़ुदा हैरान सारे शहर से।

दाल, चावल और ज़रा सा इश्क़ मांगे आदमी,
पूछ कर आया हूँ मैं अरमान सारे शहर से।

अक्ल वालों के हवाले करके बेतरतीबियाँ[1],
गाँव चलते हैं चलो नादान सारे शहर से।

ख़ुद लगा कामिल तू अपनी ख़ामियों[2] के इश्तेहार,
ले रहा है क्यों भला एहसान सारे शहर से।

--==--

[1] अव्यवस्थायें
[2] कमियों, बुराइयों